

HINDI FILE



DREAM
FOR NATION



DARE
TO SERVE



DELIVER
WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : **AUGUST 3, 2026**



Comprehensive
Coverage



Exam-Focused
Analysis



Concept Clarity
& Insights



Practice MCQs
with Explanation



Daily Updates,
Better Results



CONTACT INFO:

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



EMAIL ID:

info@sixsigmaiias.com



WEB PAGE:

www.sixsigmaiias.com



ADDRESS:

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

प्र.1 भारतीय शास्त्रीय नृत्य परंपरा के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. संगीत नाटक अकादमी द्वारा मान्यता प्राप्त प्रत्येक भारतीय शास्त्रीय नृत्य रूप अनिवार्य रूप से अपनी सैद्धांतिक नींव विशेष रूप से नाट्य शास्त्र से प्राप्त करता है।
2. प्रदर्शन वस्तुओं के एक संरचित क्रम से युक्त मार्गम प्रारूप, पारंपरिक रूप से सभी शास्त्रीय नृत्य रूपों के बजाय भरतनाट्यम से जुड़ा हुआ है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) दोनों
- (c) कोई नहीं
- (d) दी गई जानकारी से निर्धारित नहीं किया जा सकता

उत्तर: (a)

व्याख्या:

कथन 1 गलत है। यद्यपि नाट्य शास्त्र भारतीय प्रदर्शन कलाओं के लिए मूलभूत ढांचा प्रदान करता है, लेकिन प्रत्येक शास्त्रीय नृत्य परंपरा विशेष रूप से केवल इसी से उत्पन्न नहीं हुई है। मोहिनीअट्टम और कथक जैसी नृत्य परंपराएं अभिनय दर्पण, क्षेत्रीय मंदिर परंपराओं, दरबारी परंपराओं और बाद के ग्रंथों से भी महत्वपूर्ण रूप से प्रेरणा लेती हैं।

कथन 2 सही है। मार्गम प्रणाली—जो आमतौर पर अलारिप्पु से शुरू होती है और तिलाना पर समाप्त होती है—भरतनाट्यम की पारंपरिक प्रदर्शन सूची (रेपर्टरी) का गठन करती है। अन्य शास्त्रीय नृत्य रूपों की अपनी अलग प्रदर्शन संरचनाएं होती हैं।

मानवर्धन (Value Addition):

- सैद्धांतिक स्रोतों में नाट्य शास्त्र, अभिनय दर्पण, संगीत रत्नाकर और क्षेत्रीय परंपराएं शामिल हैं।
- यूपीएससी अक्सर पाठ्य नींव (ग्रंथों के आधार) और प्रदर्शन परंपराओं के बीच अंतर का परीक्षण करता है।

प्र.2 निम्नलिखित में से कौन सा राष्ट्रीय उद्यान ट्रांस-हिमालयी क्षेत्र के शीत मरुस्थल पारिस्थितिकी तंत्र में स्थित है?

- (a) सिमलीपाल राष्ट्रीय उद्यान
- (b) हेमिस राष्ट्रीय उद्यान
- (c) सुल्तानपुर राष्ट्रीय उद्यान
- (d) इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान

उत्तर: (b)

व्याख्या:

हेमिस राष्ट्रीय उद्यान लद्दाख में स्थित है और यह भारत का सबसे बड़ा अधिसूचित राष्ट्रीय उद्यान है। यह ट्रांस-हिमालयी शीत मरुस्थल पारिस्थितिकी तंत्र का प्रतिनिधित्व करता है और हिम तेंदुए, तिब्बती भेड़िये, नीली भेड़ (भरल), और उच्च ऊंचाई वाली जैव विविधता के लिए विश्व स्तर पर जाना जाता है।

शेष उद्यान पूरी तरह से अलग पारिस्थितिक क्षेत्रों से संबंधित हैं:

- **सिमलीपाल** - पूर्वी घाट के आर्द्र पर्णपाती वन।
- **सुल्तानपुर** - आर्द्रभूमि (वेटलैंड) पारिस्थितिकी तंत्र।
- **इंद्रावती** - मध्य भारतीय उष्णकटिबंधीय वन।

मानवर्धन (Value Addition):

- हेमिस राष्ट्रीय उद्यान हिम तेंदुए के दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण आवासों में से एक है।
- यह सिंधु नदी बेसिन में स्थित है।

प्र.3 ट्रेड रिसीवेबल्स डिस्काउंटिंग सिस्टम (TReDS) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. TReDS स्वीकृत व्यापार प्राप्य (ट्रेड रिसीवेबल्स) के वित्तपोषण के लिए कई वित्तपोषकों (फाइनेंसरों) को प्रतिस्पर्धी रूप से बोली लगाने की अनुमति देता है।
2. एक बार जब TReDS के माध्यम से किसी चालान (इनवॉइस) का वित्तपोषण हो जाता है, तो देय तिथि पर भुगतान का दायित्व एमएसएमई (MSME) विक्रेता से खरीदार पर स्थानांतरित हो जाता है।
3. केवल सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को ही TReDS प्लेटफॉर्म पर वित्तपोषक के रूप में भाग लेने की अनुमति है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)**व्याख्या:**

कथन 1 सही है। TReDS फाइनेंसरों को प्रतिस्पर्धी रूप से बोली लगाने में सक्षम बनाता है, जिससे एमएसएमई (MSMEs) के लिए बेहतर वित्तपोषण शर्तें सुनिश्चित होती हैं।

कथन 2 सही है। वित्तपोषण के बाद, खरीदार देय तिथि पर फाइनेंसर को भुगतान करने के लिए उत्तरदायी होता है, जिससे एमएसएमई के लिए तरलता में सुधार होता है।

कथन 3 गलत है। बैंकों के अलावा, एनबीएफसी (NBFCs) और भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) द्वारा अनुमति प्राप्त अन्य वित्तीय संस्थान भी फाइनेंसर के रूप में भाग ले सकते हैं।

मानवर्धन (Value Addition):

- TReDS कार्यशील पूंजी की उपलब्धता में सुधार करता है।
- यह भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) द्वारा विनियमित होता है।
- यह प्राप्य चक्र (रिसीवेबल साइकिल) को कम करके मुख्य रूप से एमएसएमई को लाभ पहुंचाता है।

प्र.4 भारत के महान्यायावादी (अटॉर्नी जनरल) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. महान्यायावादी राष्ट्रपति के प्रसादपर्यंत पद धारण करता है।
2. संविधान महान्यायावादी के लिए तीन वर्ष का निश्चित कार्यकाल निर्धारित करता है।
3. महान्यायावादी को संसद के दोनों सदनों और उनकी समितियों की कार्यवाही में भाग लेने का अधिकार है, लेकिन वोट देने का कोई अधिकार नहीं है।
4. महान्यायावादी को पद पर रहते हुए निजी कानूनी अभ्यास करने से प्रतिबंधित किया गया है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) केवल तीन
(d) सभी चार

उत्तर: (b)

व्याख्या:

कथन 1 सही है। महान्यायावादी राष्ट्रपति के प्रसादपर्यंत पद धारण करता है।

कथन 2 गलत है। संविधान किसी निश्चित कार्यकाल का निर्धारण नहीं करता है।

कथन 3 सही है। अनुच्छेद 88 के तहत, महान्यायावादी संसदीय कार्यवाहियों और समितियों में भाग ले सकता है लेकिन मतदान नहीं कर सकता।

कथन 4 गलत है। पूर्णकालिक सरकारी सेवकों के विपरीत, महान्यायावादी प्रतिबंधों और हितों के टकराव की शर्तों के अधीन निजी वकालत या कानूनी अभ्यास कर सकता है।

मानवर्धन (Value Addition):

- संवैधानिक प्रावधान: अनुच्छेद 76।
- योग्यताएं सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में नियुक्ति के लिए आवश्यक योग्यताओं के समान हैं।
- संघ सरकार का सर्वोच्च कानून अधिकारी।

प्र.5 निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन (A): कपास की खेती आमतौर पर लंबे पाला-रहित (फ्रोस्ट-फ्री) की अवधि वाले क्षेत्रों में केंद्रित होती है।

कारण I: कपास को कायिक (वनस्पति) वृद्धि, पुष्पन और डोडे (बॉल) के विकास के लिए गर्म तापमान के साथ एक लंबे बढ़ते मौसम की आवश्यकता होती है।

कारण II: वृद्धि की अवधि के दौरान पाला (तुषार) कपास के पौधों को नुकसान पहुंचा सकता है और उपज तथा रेशे की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है।

निम्नलिखित में से कौन सा एक सही है?

(a) कथन सही है, और कारण I और कारण II दोनों सही हैं, और दोनों कारण कथन की सही व्याख्या करते हैं।

(b) कथन सही है, कारण I सही है लेकिन कारण II गलत है।

(c) कथन गलत है, लेकिन कारण I और कारण II दोनों सही हैं।

(d) कथन सही है, कारण I गलत है लेकिन कारण II सही है।

उत्तर: (a)

व्याख्या:

कथन सही है। कपास एक उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय फसल है, जिसे किस्म के आधार पर लगभग 180-200 पाला-रहित (फ्रोस्ट-फ्री) दिनों की आवश्यकता होती है।

कारण I सही है। उचित कायिक वृद्धि, पुष्पन और डोडे के परिपक्व होने के लिए फसल चक्र के दौरान गर्म तापमान आवश्यक है।

कारण II भी सही है। पाला (तुषार) पत्तियों, फूलों और विकसित हो रहे डोडों को नुकसान पहुंचाता है, जिससे उत्पादकता और रूई (लिंग्ट) की गुणवत्ता दोनों में उल्लेखनीय कमी आती है।

दोनों कारण मिलकर पूरी तरह से यह व्याख्या करते हैं कि कपास की खेती लंबे पाला-रहित बढ़ते मौसम वाले क्षेत्रों में ही क्यों केंद्रित है।

मानवर्धन (Value Addition):

- आदर्श तापमान: लगभग 21°C–30°C।
- वर्षा की आवश्यकता: लगभग 50-100 सेमी, जिसके बाद डोडे खेलने (बॉल ओपनिंग) के दौरान तेज धूप का होना बेहतर माना जाता है।
- नमी बनाए रखने की अच्छी क्षमता वाली गहरी काली (रेगुर) मिट्टी कपास की खेती के लिए अत्यधिक उपयुक्त होती है।

दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

प्र.1 बोरोफीन (Borophene) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. बोरोफीन अपने परमाणु रूप से पतले लहरदार (corrugated) जालक के कारण विषमदैशिक (anisotropic) विद्युत चालकता प्रदर्शित करता है, जो कि ग्राफीन के विपरीत है, जो आमतौर पर समदैशिक (isotropic) इन-प्लेन चालकता प्रदर्शित करता है।
2. ग्राफीन के विपरीत, मुक्त-स्थित (free-standing) बोरोफीन को यांत्रिक छीलने (यांत्रिक नक्काशी/mechanical exfoliation) के माध्यम से प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले स्तरित बोरोन खनिजों से प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) दोनों
- (c) कोई नहीं
- (d) दी गई जानकारी से निर्धारित नहीं किया जा सकता

उत्तर: (b)

व्याख्या:

दोनों कथन सही हैं।

- **कथन 1:** बोरोफीन में शिखरों (ridges) और रिक्तियों के साथ एक अत्यधिक विषमदैशिक क्रिस्टल संरचना होती है, जिसके परिणामस्वरूप दिशा-निर्भर (विषमदैशिक) विद्युत और यांत्रिक गुण होते हैं। यह इसे ग्राफीन से अलग करता है, जिसके इन-प्लेन विद्युत गुण तुलनात्मक रूप से समदैशिक होते हैं।
- **कथन 2:** ग्रेफाइट के विपरीत, बोरोन प्राकृतिक रूप से ऐसी स्तरित संरचना में नहीं पाया जाता जो यांत्रिक छीलने (mechanical exfoliation) के लिए उपयुक्त हो। इसलिए, बोरोफीन को आमतौर पर अल्ट्रा-हाई वैक्यूम स्थितियों के तहत धात्विक सबस्ट्रेट्स पर एपिटैक्सियल (epitaxially) रूप से संश्लेषित किया जाता है।

मानवर्धन (Value Addition):

- बोरोफीन बोरोन का एक दो-आयामी अपररूप (2D allotrope) है।
- इसमें असाधारण लचीलापन, धात्विक चालकता और ऊर्जा भंडारण के लिए उच्च सैद्धांतिक क्षमता होती है।
- नैनोइलेक्ट्रॉनिक्स, सेंसर और हाइड्रोजन भंडारण के लिए इसका पता लगाया जा रहा है।

प्र.2 निम्नलिखित में से कौन पीएम-यशस्वी (वाइब्रेंट इंडिया के लिए प्रधानमंत्री युवा अचीवर्स छात्रवृत्ति पुरस्कार योजना - PM-YASASVI) के प्राथमिक उद्देश्य की सबसे अच्छी व्याख्या करता है?

- (a) विदेशों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले सभी आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को ब्याज मुक्त शिक्षा ऋण प्रदान करना।
- (b) चिन्हित शीर्ष प्रदर्शन करने वाले स्कूलों में अध्ययनरत ओबीसी (OBC), ईबीसी (EBC) और डीएनटी (DNT) छात्रों को योग्यता-आधारित छात्रवृत्ति प्रदान करना।
- (c) केंद्रीय विश्वविद्यालयों में विशेष रूप से अनुसूचित जनजाति के शोधार्थियों के लिए अनुसंधान फेलोशिप का वित्तपोषण करना।
- (d) अल्पसंख्यक समुदायों से संबंधित सभी छात्रों को बिना शर्त वित्तीय सहायता प्रदान करना।

उत्तर: (b)

व्याख्या:

पीएम-यशस्वी (PM-YASASVI) एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना (Central Sector Scheme) है जिसका उद्देश्य मुख्य रूप से अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC), आर्थिक रूप से पिछड़ा वर्ग (EBC), और विमुक्त, घुमंतू और अर्ध-घुमंतू जनजातियों (DNT/NT/SNT) से संबंधित छात्रों को योग्यता-आधारित छात्रवृत्ति प्रदान करना है।

इस योजना का उद्देश्य चिन्हित स्कूलों में पढ़ने वाले मेधावी छात्रों का समर्थन करके शैक्षिक असमानता को कम करना है।

अन्य विकल्प क्यों गलत हैं:

- (a) यह कोई शिक्षा ऋण योजना नहीं है।
- (c) यह अनुसूचित जनजाति के शोधार्थियों तक सीमित नहीं है।
- (d) यह कोई सार्वभौमिक अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति योजना नहीं है।

प्र.3 भारत 6जी एलायंस (Bharat 6G Alliance - B6GA) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह भारत के 6G पारिस्थितिकी तंत्र को विकसित करने के लिए उद्योग, शिक्षा जगत, स्टार्टअप और शोध संस्थानों को एक साथ लाने वाले एक सहयोगी मंच के रूप में कार्य करता है।
2. इसके उद्देश्यों में से एक अगली पीढ़ी के दूरसंचार में बौद्धिक संपदा (IP) निर्माण और वैश्विक मानकीकरण प्रयासों को सुविधाजनक बनाना है।
3. भारत 6जी एलायंस 6G स्पेक्ट्रम आवंटित करने के लिए संसद के एक अधिनियम के माध्यम से स्थापित एक वैधानिक नियामक प्राधिकरण है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या:

कथन 1 – सही।

भारत 6जी एलायंस दूरसंचार कंपनियों, अनुसंधान संगठनों, शिक्षा जगत, स्टार्टअप और अन्य हितधारकों को शामिल करने वाले एक सहयोगी मंच के रूप में कार्य करता है।

कथन 2 – सही।

इसके उद्देश्यों में स्वदेशी तकनीक का विकास, वैश्विक मानकों में भागीदारी, बौद्धिक संपदा का सृजन और अंतरराष्ट्रीय सहयोग शामिल है।

कथन 3 – गलत।

B6GA कोई वैधानिक नियामक (statutory regulator) नहीं है। स्पेक्ट्रम प्रबंधन सरकार और प्रासंगिक नियामक संस्थानों के तहत जारी रहता है। एलायंस एक उद्योग-नेतृत्व वाला सहयोगी निकाय है।

मानवर्धन (Value Addition):

- **भारत 6G विजन** से जुड़ा हुआ है।
- 2030 तक भविष्य की दूरसंचार प्रौद्योगिकियों में भारत के नेतृत्व का लक्ष्य रखता है।
- स्वदेशी पेटेंट और मानक आवश्यक पेटेंट (SEPs) को प्रोत्साहित करता है।

प्र.4 सोडियम-आयन बैटरी (Sodium-Ion Batteries) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. सोडियम-आयन बैटरियां आमतौर पर पारंपरिक लिथियम-आयन बैटरियों की तुलना में अधिक प्रचुर मात्रा में उपलब्ध कच्चे माल पर निर्भर करती हैं।
2. व्यावसायिक सोडियम-आयन बैटरियों में वर्तमान में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली लिथियम-आयन बैटरियों की तुलना में अधिक ग्रेविमेट्रिक ऊर्जा घनत्व (gravimetric energy density) होता है।
3. सोडियम-आयन बैटरियों को स्थिर ऊर्जा भंडारण (stationary energy storage) के लिए विशेष रूप से आशाजनक माना जाता है क्योंकि अधिकतम ऊर्जा घनत्व की आवश्यकता की तुलना में लागत और संसाधनों की उपलब्धता अक्सर अधिक महत्वपूर्ण होती है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या:

कथन 1 – सही।

लिथियम की तुलना में सोडियम व्यापक रूप से उपलब्ध और सस्ता है।

कथन 2 – गलत।

वर्तमान में, सोडियम-आयन बैटरियों में आमतौर पर उन्नत लिथियम-आयन बैटरियों की तुलना में कम ऊर्जा घनत्व होता है।

कथन 3 – सही।

ग्रिड-स्तर के ऊर्जा भंडारण में बहुत उच्च ऊर्जा घनत्व के बजाय किफायती होने, सुरक्षा और कच्चे माल की उपलब्धता को प्राथमिकता दी जाती है।

मानवर्धन (Value Addition):

- बेहतर आपूर्ति-श्रृंखला सुरक्षा।
- क्रिटिकल खनिजों (महत्वपूर्ण खनिजों) पर कम निर्भरता।
- नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण के लिए उभरती हुई तकनीक।

प्र.5 मिशन गोल्डन स्पाइस (Mission Golden Spice) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इस पहल का उद्देश्य गुणवत्ता, पता लगाने की क्षमता (traceability) और निर्यात में सुधार के माध्यम से वैश्विक मसाला मूल्य श्रृंखला (global spice value chain) में भारत की स्थिति को मजबूत करना है।
2. यह मिशन मसाला क्षेत्र में आधुनिक प्रसंस्करण, अवशेषों की निगरानी (residue monitoring) और मूल्य संवर्धन (value addition) को अपनाने को प्रोत्साहित करता है।
3. यह मिशन भारतीय मसाला बोर्ड (Spices Board of India) की किसी भूमिका के बिना विशेष रूप से राज्य सरकारों द्वारा कार्यान्वित किया जाता है।
4. भारतीय मसालों की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाना इसके प्रमुख उद्देश्यों में से एक है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (c)

व्याख्या:

कथन 1 – सही।

मिशन गोल्डन स्पाइस का उद्देश्य मसाला निर्यात में भारत की प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार करना है।

कथन 2 – सही।

गुणवत्ता आश्वासन, प्रसंस्करण अवसंरचना, पता लगाने की क्षमता (ट्रेसिबिलिटी) और मूल्य संवर्धन इसके महत्वपूर्ण फोकस क्षेत्र हैं।

कथन 3 – गलत।

भारतीय मसाला बोर्ड (Spices Board of India) इसके कार्यान्वयन और संवर्धन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

कथन 4 – सही।

निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता और अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुंच में सुधार करना इसका एक प्रमुख उद्देश्य है।

मानवर्धन (Value Addition):

- भारत मसालों का दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादक और निर्यातकों में से एक है।
- वैश्विक खाद्य सुरक्षा मानकों के अनुपालन को बढ़ाना एक प्रमुख प्राथमिकता है।

प्र.6 बाब-अल-मंदेब जलडमरूमध्य (Bab el-Mandeb Strait) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह लाल सागर (Red Sea) को अदन की खाड़ी (Gulf of Aden) से जोड़ता है।
2. यह अरब प्रायद्वीप को हॉर्न ऑफ अफ्रीका (Horn of Africa) से अलग करता है।
3. स्वेज नहर से हिंद महासागर की ओर यात्रा करने वाले पोत (vessel) को अनिवार्य रूप से इस जलडमरूमध्य से गुजरना होगा।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) सभी तीन
(d) कोई नहीं

उत्तर: (c)

व्याख्या:

सभी तीनों कथन सही हैं।

- बाब-अल-मंदेब जलडमरूमध्य लाल सागर के दक्षिणी प्रवेश द्वार का निर्माण करता है।
- यह अरब प्रायद्वीप पर स्थित यमन और हॉर्न ऑफ अफ्रीका में स्थित जिबूती तथा इरिट्रिया के बीच स्थित है।
- यह भूमध्य सागर (स्वेज नहर के माध्यम से) को हिंद महासागर से जोड़ने वाला एक अपरिहार्य समुद्री चोकपॉइंट (चोक बिंदु) है।

यूपीएससी मानवर्धन (मानचित्र / Map):

- **उत्तर:** लाल सागर (Red Sea)
- **दक्षिण:** अदन की खाड़ी (Gulf of Aden)
- **अदन की खाड़ी से आगे:** अरब सागर (Arabian Sea)
- **पश्चिमी तट:** जिबूती और इरिट्रिया
- **पूर्वी तट:** यमन
- वैश्विक ऊर्जा और कंटेनर व्यापार के लिए दुनिया के सबसे रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण समुद्री चोकपॉइंट्स में से एक।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

(जीएस पेपर I – भारतीय समाज एवं सामाजिक परिवर्तन)

प्र.1 "भारत में शहरीकरण के बदलते स्वरूप की चर्चा कीजिए। सामाजिक संरचना, प्रवासन के पैटर्न और क्षेत्रीय विकास पर इसके प्रभाव का परीक्षण कीजिए। शहरीकरण को अधिक समावेशी और टिकाऊ बनाने के लिए उपायों का सुझाव दीजिए।" (250 अंक शैली)

नमूना उत्तर (Sample Answer)

प्राकृतिक जनसंख्या वृद्धि, प्रवासन और आर्थिक परिवर्तन के कारण शहरी क्षेत्रों में रहने वाली जनसंख्या के बढ़ते अनुपात को **शहरीकरण** (Urbanisation) कहा जाता है। एनसीईआरटी (NCERT) कक्षा XII 'भारत: लोग और अर्थव्यवस्था' शहरीकरण को आर्थिक विकास के परिणाम और चालक दोनों के रूप में रेखांकित करती है। भारत उद्योगीकरण, सेवा क्षेत्र और बेहतर कनेक्टिविटी द्वारा संचालित तीव्र शहरी विस्तार का गवाह बन रहा है।

शहरीकरण ने भारत की **सामाजिक संरचना** को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया है। रोजगार की गतिशीलता और बदलती जीवन शैली के कारण पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली का स्थान तेजी से एकल (न्यूक्लियर) परिवार ले रहे हैं। व्यावसायिक विविधीकरण ने कठोर जाति-आधारित व्यवसायों को कमजोर कर दिया है, हालांकि सामाजिक असमानताएं बनी हुई हैं। शहरी केंद्र अधिक शैक्षिक अवसर, महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी और विविध संस्कृतियों से जुड़ाव प्रदान करते हैं, जिससे सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा मिलता है।

प्रवासन (Migration) भारतीय शहरीकरण की एक परिभाषित विशेषता बन गया है। ग्रामीण-से-शहरी प्रवासन रोजगार के अवसरों, शैक्षणिक संस्थानों और बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं से प्रेरित है। हालांकि, अनियोजित प्रवासन के परिणामस्वरूप अनौपचारिक बस्तियों (झुग्गी-झोपड़ियों) की वृद्धि, भीड़भाड़, नागरिक सुविधाओं पर दबाव और अपर्याप्त किफायती आवास जैसी समस्याएं उत्पन्न हुई हैं।

क्षेत्रीय विकास असमान हो गया है। बेंगलुरु, हैदराबाद, दिल्ली और मुंबई जैसे महानगरीय शहर असमान रूप से अधिक निवेश आकर्षित करते हैं, जबकि कई छोटे और मध्यम शहर अविकसित बने हुए हैं। यह असंतुलन क्षेत्रीय विषमताओं और आर्थिक गतिविधियों के अत्यधिक संकेंद्रण में योगदान देता है।

शहरीकरण पर्यावरणीय चुनौतियाँ भी पैदा करता है जिनमें वायु प्रदूषण, भूजल की कमी, ठोस कचरे का संचय, शहरी बाढ़ और हरे स्थानों (ग्रीन स्पेस) का नुकसान शामिल है। जलवायु परिवर्तन इन संवेदनशीलताओं को और बढ़ाता है।

शहरीकरण को **समावेशी बनाने के लिए** वित्तीय और प्रशासनिक विकेंद्रीकरण के माध्यम से शहरी स्थानीय निकायों को मजबूत करने, ट्रांजिट-ओरिएंटेड डेवलपमेंट (TOD) को बढ़ावा देने, किफायती आवास को प्रोत्साहित करने, सार्वजनिक परिवहन में सुधार करने, स्मार्ट प्रौद्योगिकियों को अपनाने, शहरी पारिस्थितिकी प्रणालियों की रक्षा करने और महानगरीय योजना संस्थानों को मजबूत करने की आवश्यकता है। औद्योगिक गलियारों और टायर-II तथा टायर-III शहरों के विकास के माध्यम से संतुलित क्षेत्रीय विकास मेगा-सिटीज पर प्रवासन के दबाव को कम कर सकता है।

इस प्रकार, शहरीकरण से केवल शहरों का आकार नहीं बढ़ना चाहिए बल्कि स्थिरता, समावेशिता और लचीलेपन (resilience) के माध्यम से शहरी जीवन की गुणवत्ता में सुधार होना चाहिए।

(जीएस पेपर II – शासन एवं सामाजिक न्याय)

प्र.2 "भारत में शासन व्यवस्था (गवर्नेंस) में सुधार के लिए डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (DPI) की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए। इसके विस्तार से जुड़े अवसरों के साथ-साथ चुनौतियों की भी चर्चा कीजिए।"

नमूना उत्तर (Sample Answer)

आज शासन व्यवस्था कुशल सार्वजनिक सेवा वितरण के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकियों पर अत्यधिक निर्भर करती है। भारत का **डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (DPI)**, जिसमें **आधार, यूपीआई (UPI), डिजिलॉकर (DigiLocker) और कोविन (CoWIN)** जैसे प्लेटफॉर्म शामिल हैं, वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त शासन नवाचार के रूप में उभरा है।

डीपीआई (DPI) का सबसे प्रमुख योगदान पारदर्शिता और दक्षता बढ़ाने में निहित है। आधार-सक्षम प्रमाणीकरण ने कल्याणकारी योजनाओं में लाभार्थियों के दोहरीकरण (फर्जीवाड़े) को कम किया है। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) ने सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में सब्सिडी स्थानांतरित करके रिसाव (लीकेज) को न्यूनतम कर दिया है। यूपीआई (UPI) ने न्यूनतम लागत पर सुरक्षित, रीयल-टाइम वित्तीय लेनदेन को सक्षम करके डिजिटल भुगतानों को बदल दिया है।

DPI ने जन धन खातों, आधार और मोबाइल कनेक्टिविटी को एकीकृत करके **वित्तीय समावेशन** को मजबूत किया है। इसने लाखों पूर्व में असंबद्ध (unbanked) नागरिकों को औपचारिक वित्तीय सेवाओं तक पहुंचने में सक्षम बनाया है। डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने कर प्रशासन, सार्वजनिक खरीद (प्रोक्योरमेंट) और नागरिक शिकायत निवारण में भी सुधार किया है।

कोविड-19 महामारी ने टीकाकरण प्रबंधन के लिए कोविन (CoWIN) और डिजिटल प्रमाणपत्रों के लिए डिजिलॉकर (DigiLocker) के माध्यम से DPI की उपयोगिता का प्रदर्शन किया। ऐसे प्लेटफॉर्मों ने विभागों में प्रशासनिक प्रतिक्रियात्मकता और अंतर-संचालनीयता (interoperability) को बढ़ाया है।

इन उपलब्धियों के बावजूद कई **चुनौतियां** बनी हुई हैं। **डिजिटल विभाजन** ग्रामीण आबादी, महिलाओं और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों की पहुंच को सीमित करता है। डेटा गोपनीयता की चिंताएं, साइबर सुरक्षा खतरे और व्यक्तिगत जानकारी के संभावित दुरुपयोग के लिए मजबूत कानूनी सुरक्षा उपायों की आवश्यकता है। डिजिटल प्रणालियों पर निर्भरता उन नागरिकों को बाहर कर सकती है जिनमें डिजिटल साक्षरता या विश्वसनीय इंटरनेट कनेक्टिविटी की कमी है।

संस्थागत क्षमता एक और चुनौती है। प्रभावी डिजिटल प्रशासन के लिए सरकारी अधिकारियों को निरंतर प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। कई डेटाबेस में अंतर-संचालनीयता के साथ-साथ मजबूत जवाबदेही तंत्र भी होना चाहिए।

आगे की राह में डिजिटल साक्षरता को मजबूत करना, ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी का विस्तार करना, व्यापक डेटा सुरक्षा ढांचे को लागू करना, साइबर सुरक्षा बुनियादी ढांचे को बढ़ाना और दिव्यांग नागरिकों के लिए पहुंच सुनिश्चित करना शामिल है। नागरिकों के अधिकारों को संरक्षित करते हुए सार्वजनिक-निजी सहयोग और खुले डिजिटल मानकों को जारी रखा जाना चाहिए।

भारत का DPI तकनीकी नवाचार को जन कल्याण के साथ जोड़ने वाले एक महत्वपूर्ण शासन मॉडल का प्रतिनिधित्व करता है। इसकी दीर्घकालिक सफलता गोपनीयता, समावेशिता और संवैधानिक मूल्यों के साथ दक्षता को संतुलित करने पर निर्भर करती है।

(जीएस पेपर III – अर्थव्यवस्था)

प्र.3 "भारत की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाने में रसद बुनियादी ढांचे (लॉजिस्टिक्स इंफ्रास्ट्रक्चर) के महत्व की चर्चा कीजिए। सतत आर्थिक विकास प्राप्त करने में मल्टीमॉडल कनेक्टिविटी की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।"

नमूना उत्तर (Sample Answer)

कुशल **लॉजिस्टिक्स इंफ्रास्ट्रक्चर** आर्थिक प्रतिस्पर्धात्मकता के लिए मौलिक है। यह घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में माल की आवाजाही की लागत, गति और विश्वसनीयता को निर्धारित करता है। एनसीईआरटी (NCERT) कक्षा XII समष्टि अर्थशास्त्र (Macroeconomics) आर्थिक विकास के एक महत्वपूर्ण चालक के रूप में बुनियादी ढांचे पर बल देती है।

भारत की लॉजिस्टिक्स लागत ऐतिहासिक रूप से कई विकसित अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में अधिक रही है, जिससे निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता प्रभावित होती है। राजमार्गों, रेलवे, अंतर्देशीय जलमार्गों, बंदरगाहों, हवाई अड्डों और वेयरहाउसिंग बुनियादी ढांचे में सुधार से परिवहन लागत कम होती है और आपूर्ति श्रृंखला (सप्लाय चेन) की दक्षता बढ़ती है।

मल्टीमॉडल कनेक्टिविटी परिवहन के विभिन्न साधनों को एक सहज लॉजिस्टिक्स नेटवर्क में एकीकृत करती है। डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर, पीएम गति शक्ति, भारतमाला और सागरमाला जैसी पहलों का उद्देश्य देरी को कम करके और परिवहन साधनों के बीच समन्वय में सुधार करके माल की आवाजाही को बेहतर बनाना है।

उन्नत लॉजिस्टिक्स से **कृषि** को सीधे तौर पर फसल कटाई के बाद के नुकसान को कम करके और बाजार तक पहुंच को सुविधाजनक बनाकर लाभ होता है। विनिर्माण उद्योगों को कच्चे माल की समय पर उपलब्धता और इन्वेंट्री लागत में कमी के माध्यम से लाभ होता है। ई-कॉमर्स जैसे सेवा क्षेत्र भी कुशल लॉजिस्टिक्स प्रणालियों पर निर्भर करते हैं।

पर्यावरणीय रूप से, मल्टीमॉडल परिवहन रेलवे और जलमार्गों के अधिक उपयोग को प्रोत्साहित करता है, जो सड़क परिवहन की तुलना में अपेक्षाकृत ऊर्जा-कुशल हैं। यह कम कार्बन उत्सर्जन में योगदान देता है और भारत की जलवायु प्रतिबद्धताओं का समर्थन करता है।

चुनौतियों में खंडित योजना, अपर्याप्त भंडारण (वेयरहाउसिंग), खराब लास्ट-माइल कनेक्टिविटी, भूमि अधिग्रहण में देरी और उन्नत लॉजिस्टिक्स प्रौद्योगिकियों का सीमित अपनाना शामिल है।

नीतिगत प्राथमिकताओं में मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक्स पार्कों का विस्तार करना, डिजिटल लॉजिस्टिक्स प्लेटफॉर्मों को मजबूत करना, ग्रीन लॉजिस्टिक्स को बढ़ावा देना, निजी निवेश को प्रोत्साहित करना, नियामक प्रक्रियाओं को सरल बनाना और सीमा शुल्क (कस्टम्स) दक्षता में सुधार करना शामिल है। कोल्ड चेन इंफ्रास्ट्रक्चर में क्षमता निर्माण भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

कुशल लॉजिस्टिक्स न केवल निर्यात और औद्योगिक उत्पादकता को बढ़ाता है बल्कि संतुलित क्षेत्रीय विकास और रोजगार सृजन को भी बढ़ावा देता है। इसलिए, बुनियादी ढांचे का विकास भारत की विकास रणनीति का एक केंद्रीय स्तंभ बना रहना चाहिए।

(जीएस पेपर IV – नीतिशास्त्र/एथिक्स)

प्र.4 "'सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा (इंटीग्रिटी) की परीक्षा सामान्य प्रशासन के दौरान नहीं बल्कि संकट के समय होती है।' उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए।"

नमूना उत्तर (Sample Answer)

सत्यनिष्ठा (Integrity) का तात्पर्य व्यक्तिगत परिणामों की परवाह किए बिना नैतिक सिद्धांतों, ईमानदारी और जन कल्याण के प्रति अटूट प्रतिबद्धता से है। लोक प्रशासन में, संकट अक्सर संस्थानों और सिविल सेवकों के वास्तविक नैतिक चरित्र को उजागर करते हैं।

महामारी, बाढ़, भूकंप या सांप्रदायिक गड़बड़ी जैसी आपात स्थितियों के दौरान, प्रशासकों को दुर्लभ संसाधनों, सार्वजनिक अपेक्षाओं और राजनीतिक दबावों से जुड़ी परस्पर विरोधी प्राथमिकताओं का सामना करना पड़ता है। कानून, न्यायसंगतता (equity) और करुणा के बीच संतुलन बनाने में नैतिक निर्णय लेना आवश्यक हो जाता है।

सत्यनिष्ठा के लिए खरीद (प्रोक्योरमेंट) में पारदर्शिता, राहत सामग्रियों का निष्पक्ष वितरण और सार्वजनिक धन के उपयोग में जवाबदेही की आवश्यकता होती है। कोविड-19 महामारी ने लोक प्रशासन के अनुकरणीय और त्रुटिपूर्ण दोनों उदाहरणों को प्रदर्शित किया। अत्यधिक दबाव के बावजूद कई अधिकारियों ने ऑक्सीजन की निर्बाध आपूर्ति, पारदर्शी अस्पताल प्रबंधन और प्रभावी टीकाकरण अभियान सुनिश्चित किए।

नैतिक नेतृत्व के लिए साहस की भी आवश्यकता होती है। अधिकारियों को रिकॉर्ड में हेरफेर करने या प्रभावशाली व्यक्तियों का पक्ष लेने के दबाव का सामना करना पड़ सकता है। सत्यनिष्ठा के लिए संवैधानिक मूल्यों और कानून के शासन को बनाए रखते हुए ऐसे दबावों का विरोध करने की आवश्यकता होती है।

करुणा सत्यनिष्ठा की पूरक है। लोक सेवकों को नागरिकों के साथ ईमानदारी से संवाद करना चाहिए, समय पर जानकारी प्रदान करनी चाहिए और बच्चों, बुजुर्गों और दिव्यांग व्यक्तियों सहित संवेदनशील आबादी को प्राथमिकता देनी चाहिए।

संस्थागत रूप से, नैतिक शासन के लिए मजबूत सतर्कता तंत्र, व्हिसलब्लोअर संरक्षण, पारदर्शी खरीद प्रणाली और नागरिक भागीदारी की आवश्यकता होती है। निरंतर नीतिशास्त्र प्रशिक्षण और जवाबदेही को बढ़ावा देने वाली संगठनात्मक संस्कृति सत्यनिष्ठा को और मजबूत करती है।

सत्यनिष्ठा अंततः **सार्वजनिक विश्वास** का निर्माण करती है, जो संकट के समय सबसे मूल्यवान प्रशासनिक संसाधन बन जाता है। इसलिए, नैतिक आचरण को केवल व्यक्तिगत गुण के रूप में नहीं बल्कि लोकतांत्रिक शासन के लिए एक संस्थागत आवश्यकता के रूप में देखा जाना चाहिए।

(करंट अफेयर्स)

प्र.5 "'शस्त्रहीन और निरस्त्रीकरण शांति के लिए रोम घोषणापत्र' (Rome Declaration for an Unarmed and Disarming Peace) निरस्त्रीकरण की ओर नवीनीकृत वैश्विक प्रतिबद्धता को दर्शाता है। समकालीन भू-

राजनीतिक संदर्भ में इसके महत्व की चर्चा कीजिए। सार्थक वैश्विक निरस्त्रीकरण प्राप्त करने में आने वाली चुनौतियों का परीक्षण कीजिए।"

नमूना उत्तर (Sample Answer)

'शस्त्रहीन और निरस्त्रीकरण शांति के लिए रोम घोषणापत्र' वैश्विक हथियारों की प्रतिस्पर्धा को कम करने और टिकाऊ शांति के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करने के महत्व को दोहराता है। भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता, क्षेत्रीय संघर्षों और तीव्र सैन्य तकनीकी प्रगति द्वारा चिह्नित समय में, यह घोषणापत्र संवाद, कूटनीति और सामूहिक सुरक्षा की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

इसका सबसे बड़ा **महत्व** यह पुष्टि करने में निहित है कि टिकाऊ शांति केवल सैन्य निरोध (military deterrence) पर नहीं टिक सकती, बल्कि इसे विश्वास-निर्माण, संघर्ष रोकथाम और अंतरराष्ट्रीय कानून के पालन द्वारा समर्थित होना चाहिए। घोषणापत्र पारंपरिक और रणनीतिक हथियारों से उत्पन्न जोखिमों को कम करने के लिए बहुपक्षीय जुड़ाव को प्रोत्साहित करता है।

समकालीन सुरक्षा वातावरण बढ़ते सैन्य व्यय, परमाणु शस्त्रागार के आधुनिकीकरण, साइबर युद्ध, स्वायत्त हथियार प्रणालियों (autonomous weapon systems) और अंतरिक्ष के सैन्यीकरण द्वारा चिह्नित है। ये घटनाक्रम पारंपरिक हथियार नियंत्रण ढांचों को जटिल बनाते हैं। इसलिए यह घोषणापत्र वैश्विक संस्थानों और विश्वास-निर्माण उपायों को मजबूत करने की तात्कालिकता पर प्रकाश डालता है।

भारत जैसे देशों के लिए, यह घोषणापत्र वैध राष्ट्रीय सुरक्षा चिंताओं को पहचानते हुए अंतरराष्ट्रीय शांति को बढ़ावा देने के व्यापक उद्देश्य के साथ संरेखित होता है। भारत ने उभरती प्रौद्योगिकियों के जिम्मेदार उपयोग के साथ-साथ हमेशा सार्वभौमिक, गैर-भेदभावपूर्ण और सत्यापन योग्य परमाणु निरस्त्रीकरण की वकालत की है।

हालांकि, **सार्थक निरस्त्रीकरण** प्राप्त करना कठिन बना हुआ है। प्रमुख शक्तियों के बीच रणनीतिक अविश्वास, क्षेत्रीय संघर्ष, असमान सुरक्षा धारणाएं और तकनीकी नवाचार निरंतर सैन्य आधुनिकीकरण के लिए प्रोत्साहन पैदा करते हैं। अनुपालन का सत्यापन (verification) और प्रवर्तन तंत्र निरंतर चुनौतियां बने हुए हैं।

आगे की राह में बहुपक्षीय निरस्त्रीकरण वार्ता को पुनर्जीवित करना, अंतरराष्ट्रीय संधियों को मजबूत करना, रक्षा नीतियों में पारदर्शिता को बढ़ावा देना, विश्वास-निर्माण उपायों को बढ़ाना और कूटनीति के माध्यम से विवादों के शांतिपूर्ण समाधान को प्रोत्साहित करना शामिल है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), साइबर क्षमताओं और स्वायत्त हथियारों जैसे उभरते क्षेत्रों में भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत नियामक ढांचों की आवश्यकता है।

रोम घोषणापत्र एक महत्वपूर्ण मानक अनुस्मारक (normative reminder) के रूप में कार्य करता है कि स्थायी अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा अंततः निरंतर हथियार प्रतिस्पर्धा के बजाय सहयोग पर निर्भर करती है। जबकि कार्यान्वयन चुनौतीपूर्ण बना हुआ है, स्थायी शांति के वैश्विक लक्ष्य को आगे बढ़ाने के लिए निरंतर राजनीतिक प्रतिबद्धता और प्रभावी बहुपक्षवाद अपरिहार्य हैं।

